संस्थान समाचार

81-82 संयुक्तांक

वर्ष 1986-87

राज्य शैक्षिक प्रशिक्षण एवं अनुसन्धान परिषद,
उत्तर प्रदेश
राज्य शिक्षा संस्थान, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

Sub. National Systems Unit,
National Institute of Educational
Planning and Aministration
17-B,Sri Aurobindo Marg,NewDelhi-110016
DOC. No.....
Date.....

संस्थान समाचार

81–82 संयुक्तांक

[अप्रैल–जून 86, जुलाई-सितम्बर 86]

प्रधान सम्पादक
डॉ० राधा मोहन मिश्र
प्राचार्य
राज्य शिक्षा संस्थान
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

सहसम्पादक
डॉ० राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
उप-प्राचार्य
राज्य शिक्षा संस्थान
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

प्रकाशन–मंडल

श्रीमती सरला खन्ना	:	शोध प्राध्यापक [संयोजिका]
श्रीमती सावित्री दुबे	:	शोध पार्षद
कु० इन्दुबाला दीक्षित	:	शोध पार्षद

विषय-सूची

क्रम संख्या			पृष्ठ संख्या
1	सामाजिक पुनर्रचना और हमारे विद्यालय	...	1–8
2	मुक्ति [कहानी]	...	9–11
3	लोग कहते हैं [कविता]	...	12–15
4	पढ़ना, लिखना कैसे सिखाएँ [निबन्ध]	—	16–22
5	राज्य शिक्षा संस्थान, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद के विभिन्न अनुभागों एवं परियोजनाओं की त्रैमासिक आख्याएँ [अप्रैल–जून 86]	...	23–29
6	त्रैमासिक आख्याएँ [जुलाई–सितम्बर 86]	...	30–40

आमुख

संस्थान समाचार, राज्य शिक्षा संस्थान, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद की गति विधियों को प्रकाशित करने वाली शैक्षिक पत्रिका है। प्राथमिक शिक्षा के गुणात्मक उन्नयन के लिये यह शिक्षकों को तथा शिक्षा प्रेमियों को प्रेरित करती है। यह पत्रिका वर्ष 1964 से शिक्षा जगत की सेवा करती आ रही है। इस पत्रिका का संयुक्तांक 81–82 प्रबुद्ध वर्ग के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे प्रसन्नता हैं। इस संयुक्तांक में शिक्षा का सार्वजनीकरण [निबन्ध] मुक्ति [कहानी] लोग कहते हैं [कविता] तथा पढ़ना-लिखना कैसे सीखें [निबन्ध] वर्तमान चिन्तनधारा के परिप्रेक्ष्य में लिखे गये हैं। साथ ही राज्य शिक्षा संस्थान, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद की त्रैमासिक आख्याएँ [अप्रैल-जून 86, जुलाई-सितम्बर 86] मुद्रित की गयी हैं।

आशा है सुविज्ञ शिक्षाविदों को उपर्युक्त रचनाएँ उपयोगी प्रतीत होंगी तथा शिक्षा जगत में कार्यरत व्यक्तियों को प्रेरणा प्रदान करेंगी। इस पत्रिका के सहयोगियों को मैं हृदय से धन्यवाद देता हूँ। संस्थान समाचार के सम्बन्ध में शिक्षकों और शिक्षाविदों से रचनात्मक सुझाव सादर आमंत्रित हैं। उनका उपयोग कर इसके आगामी अंकों को और अधिक उपयोगी बनाने का प्रयास किया जाएगा।

डॉ० राधा मोहन मिश्र
प्राचार्य
राज्य शिक्षा संस्थान
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

सामाजिक पुनर्रचना और हमारे विद्यालय

श्रीमती सावित्री दुबे
शोध पार्षद
राज्य शिक्षा संस्थान, उ० प्र० इलाहाबाद

किसी राष्ट्र अथवा समाज के विद्यालय उसके जीवन के वे अंग हैं जिनका विशेष कार्य राष्ट्र की आत्मिक शक्ति को दृढ़ करना, उसके ऐतिहासिक ज्ञातव्य को बनाये रखना एवं अतीत की सफलताओं को सुरक्षित रखते हुए उसके भविष्य को निश्चित करना हैं। अपने विद्यालयों द्वारा समाज को उन चिरस्थायी स्रोतों को स्मरण रखना चाहिए जिनसे इसके जीवन के सर्वोत्तम आन्दोलनों को प्रेरणा मिली है। इसको अपने निर्मल आदर्शों को नयी प्रेरणा और नयी दिशा देते रहना चाहिये।

विद्यालय में उन मानवीय गतिविधियों का प्रतिबिम्ब दिखाई देना चाहिये जो व्यापक जगत में महानतम और सबसे अधिक स्थायी सार्थकता रखती हैं और मानवीय स्वरूप की भव्य अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रश्न उठ सकता है कि वे कौन सी मानवीय गतिविधियाँ हैं जिनका प्रतिबिम्ब विद्यालयों में होना चाहिए। स्वभावतः यह दो समूहों में आती हैं। प्रथम समूह में वे कार्य आते हैं जो व्यष्टिगत और समष्टिगत जीवन की अवस्थाओं को सुरक्षित रखते हैं और इनके मानदंड को विकसित करते हैं जैसे स्वास्थ्य, शारीरिक सौन्दर्य, शिष्टाचार, सामाजिक संगठन, नैतिक नियम और धर्म। दूसरे भाग में वे कार्य आते हैं जो सृजनात्मक कार्य हैं और जिनके बारे में यह कहा जा सकता है कि वे सभ्यता का ठोस ढाँचा हैं। पहले समूह के कार्य अपनी प्रकृति के कारण विषम नहीं माने जा सकते, वे हमारी संस्कृति के अंग हैं परन्तु सुनिश्चित अध्यापन द्वारा उन्हें प्रेरित तथा पुष्ट किया जा सकता है उदाहरणार्थ सामाजिक संगठन एवं नैतिक नियम स्कूल के सारे जीवन में व्याप्त होने चाहिये।

दूसरे समूह के अन्तर्गत शिक्षा की प्रत्येक पूर्ण योजना में साहित्य, कला संगीत, दस्तकारी (बुनाई, लकड़ी पर खुदाई, अक्षर बनाना आदि) विज्ञान जिसमें गणित, संख्या, स्थान और समय का विज्ञान सम्मिलित है और इतिहास तथा भूगोल आदि होने चाहिये।

विद्यालय समाज का एक अंग है जो एक संस्था के रूप में कार्य करता है और संस्थाएँ व्यक्ति के सामूहिक सम्बन्धों को व्यक्त करती हैं। किसी विचारक ने कहा है कि संस्थाएँ मानव जाति के पारस्परिक सम्बन्धों को व्यक्त करनेवाली मान्य प्रतीक हैं। अतएव एक संस्था के रूप में विद्यालय स्वयं समाज से प्रभावित होता है और समाज को प्रभावित भी करता है। सामाजिक पुनर्रचना में विद्यालय का स्थान निर्धारित करने के लिए सामाजिक

परिवर्तन के प्रमुख कारणों को जान लेना समीचीन होगा। सामाजिक परिवर्तन मुख्यतः निम्न तथ्यों पर आधारित हैं :—

१. भौतिक तथ्य
२. जैविक तथ्य
३. तकनीकी तथ्य
४. सांस्कृतिक तथ्य

किसी भी देश में सामाजिक परिवर्तन किसी न किसी रूप में इन तथ्यों से अवश्य प्रभावित होता है। हमारे देश में भी यह तथ्य कारण माने जा सकते हैं। विचार करने की बात यह हैं कि इस प्रकार के परिवर्तन और पुनर्रचना में विद्यालय की क्या भूमिका होनी चाहिए। भौतिक तथ्य समाज के वातावरण को प्रभावित करते हैं। जैविक तथ्य प्राणि-शास्त्र से प्रभावित होते हैं। देश में होने वाले नित्य नये आविष्कार तकनीकी तथ्य से प्रभावित होकर सभ्यता को विकसित करते हैं। सांस्कृतिक तथ्य धर्म दर्शन एवं कला को प्रभावित करते हैं। शिक्षण-संस्था के रूप में विद्यालय इन सभी तथ्यों को प्रभावित कर सकता है। विद्यालय समाज का एक अंग है इसलिए सामाजिक परिवर्तन का प्रभाव विद्यालय पर अवश्य पड़ेगा तथा विद्यालयों की शिक्षण विधि में परिवर्तन एक नवीन सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करेगा।

भारतीय शिक्षा के इतिहास को देखने से यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि किसी समाज की आवश्यकता के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य निर्धारित किये जाते हैं और शिक्षा के उद्देश्यों के अनुकूल विद्यालय का रूप बनाया जाता है। प्राचीन वैदिक युग में जब हमारा समाज वर्ण व्यवस्था में विभाजित था। ज्ञान का रूप वेदों के पठन-पाठन में देखा जाता था। छात्र गुरू के आश्रम में जाकर विद्याध्ययन करते थे। जिस प्रकार समाज में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र चार वर्ण थे उसी प्रकार मनुष्य के जीवन के चार आश्रम थे ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं सन्यास। भारत की प्राचीन शिक्षा व्यवस्था तत्कालीन समाज की आवश्यकता के अनुरूप थी, परन्तु शनैः शनैः सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन हुआ और विद्यालयों के रूप में भी परिवर्तन होता गया। नालंदा एवं तक्षशिला जैसे विद्यालयों में विदेशों से आकर छात्र शिक्षा ग्रहण करते थे और भारतीय संस्कृति एवं दर्शन से प्रेरणा प्राप्त करते थे। मुगल शासन काल में पराधीन भारत अपनी संस्कृति के प्राचीन रूप को विकसित न कर सका। बौद्ध बिहारों, स्तूपों के शिक्षा केन्द्र, मस्जिद, मकतबों में सीमित हो गये और अंग्रेजों के आगमन पर इन विद्यालयों ने नवीन रूप ग्रहण किया।

समाज की संस्कृति अंग्रेजी शासन से प्रभावित हुई और नवीन राजसत्ता को एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता हुई जिसमें संस्कृत पढ़े पंडितों या फ़ारसी पढ़े मौलवियों की

आवश्यकता न थी अपितु एक सुदृढ़ शासन व्यवस्था के लिए अंग्रेजी पढ़े लिखे स्वामिभक्त कर्मचारियों की आवश्यकता थी इसलिए विद्यालय नये उद्देश्य को लेकर बनाये गये। मैकाले ने अंग्रेज़ी शिक्षा का प्रचार करते हुए कहा कि यदि किसी देश को गुलाम बनाना है तो उसकी संस्कृति को पहले बदलना होगा। इसीलिए अंग्रेज़ों ने अपने अनुरूप नवीन शिक्षा प्रणाली निर्मित की और पाश्चात्य सभ्यता की चमक में भारतीय अपनी संस्कृति के मूल तत्व को भुला बैठे। इस प्रकार शिक्षा एवं समाज का रूप पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित हुआ जिससे स्पष्ट है कि समाज की तत्कालीन आवश्यकता के अनुसार ही शिक्षा का रूप निर्धारित होता हैं यद्यपि उसके द्वारा मूल सांस्कृतिक तत्व न तो विलीन होते हैं और न पूर्णतः विनष्ट होते हैं। दीर्घकाल की पराधीनता के पश्चात् भारतीयों में चेतना की एक नयी लहर प्रवाहित हुई। स्वतंत्रता आन्दोलन के साथ यह धारा बलवती होती गयी और स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात विद्यालयों की व्यवस्था में भी परिवर्तन हुआ।

लोकतंत्रात्मक सरकार की स्थापना में अधिक से अधिक लोगों को शिक्षित होने का अवसर मिला, विद्यालयों में नवीन शिक्षा योजनाओं का प्रसार किया गया। इस प्रकार समाज के परिवर्तन के साथ विद्यालयों के रूप में भी परिवर्तन होता गया और शिक्षा का नवीन रूप सामाजिक परिवर्तन को प्रभावित करता रहा।

सामाजिक परिवर्तन का मूल कारण किसी व्यक्ति की वह शक्ति होती है जो अपनी नवीन विचार धारा में अचानक ही समाज को एक नया मोड़ तथा नया जीवन देती है। युगों से सोये राष्ट्र की चेतना को जगा देती है और युग धर्म को बदल देती है जैसा कि आधुनिक युग में पूज्य बापू ने किया—

"चल पड़े जिधर दो डग मग में—
चल पड़े कोटि पग उसी ओर"
—सोहन लाल द्विवेदी

इतनी दीर्घकालीन साधना और बलिदानों के पश्चात जो स्वतंत्रता भारतीयों ने प्राप्त की है उसकी रक्षा का दायित्व सुयोग्य नागरिकों पर निर्भर है और आदर्श नागरिकों का निर्माण करके विद्यालय अपने दायित्व की पूर्ति करने में समर्थ होंगे। समाज एवं संस्कृति के मूल्यों की रक्षा करते हुए उनका जीवन में उचित प्रयोग करने वाले व्यक्तित्व का निर्माण विद्यालय का कार्य होगा। राष्ट्र कवि स्व० मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में—

"हम कौन थे क्या हो गये हैं—
और क्या होंगे अभी,
आओ विचारें बैठ करके
ये समस्याएँ सभी।"

इस समस्या का समाधान एक नवीन सामाजिक संरचना में सहायक होगा। इस सामाजिक पुनर्रचना में विद्यालय का महत्वपूर्ण स्थान होगा।

ज्ञान के द्रुतगति से प्रसार एवं वैज्ञानिक, तकनीकी क्रान्ति के साथ चलने और दूसरी ओर मनुष्य के सृजनात्मक विकास और समाज एवं मानवता के प्रति समर्पित नागरिकों का निर्माण करने का दायित्व शिक्षा एवं विद्यालयों पर है। उच्च शिक्षा एवं तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में गत्यात्मकता को बढ़ावा देते हुए प्रत्येक भारतीय की क्षमता के संवर्द्धन हेतु समान अवसर प्रदान किया जाना चाहिये। विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों, असमानता निवारण, प्राथमिक शिक्षा का सार्वजनीकरण, प्रौढ़ साक्षरता, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शोध आदि के कार्यान्वयन के लिये आवश्यक वित्तीय संसाधन उपलब्ध कराना सम्पूर्ण राष्ट्र का दायित्व होगा।

नैतिक मूल्यों के ह्रास, भौतिकता के प्रति बढ़ते हुए मोह, वर्ग भेद, साम्प्रदायिकता का अन्त करके राष्ट्रीय एकता तथा अखंडता की भावना को विकसित करने एवं नैतिक मूल्यों के प्रतिस्थापन हेतु जिस मूल्य शिक्षा की संकल्पना नयी शिक्षा नीति में की गयी है उसका क्रियान्वयन विद्यालय द्वारा ही सम्भव है। विद्यालय द्वारा ही ऐसे सुयोग्य एवं प्रतिभाशाली नागरिकों का निर्माण किया जा सकता है जो हमारी सांस्कृतिक विरासत तथा राष्ट्रीय एवं सार्वभौमिक लक्ष्यों तथा मूल्यों को जीवन में व्यवहृत कर सकें। शिक्षा की प्रमुख भूमिका सुयोग्य नागरिकों के रूप में ऐसी ही जनशक्ति का विकास करना है जो अपने समस्त दायित्वों को संभालने के साथ देश की संस्कृति की रक्षा करते हुए राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण कर सके और विश्व के प्रतियोगी बाज़ार में पूर्ण आत्मविश्वास के साथ खड़ी हो सके।

इस प्रकार सामाजिक पुनर्रचना की दिशा में विद्यालय अपने समुचित सहयोग द्वारा सामाजिक परिवर्तन को प्रगतिशील मार्ग की ओर गतिशील करने में समर्थ होंगे।

मुक्ति

प्रेम स्वरूप श्रीवास्तव
शोध प्राध्यापक
राज्य शिक्षा संस्थान उ० प्र०, इलाहाबाद

(आदिकाल से ही मनुष्य रोग, वृद्धावस्था और मृत्यु के भय से आतंकित रहा है। पर मनुष्य अपने ही भीतर की एक शक्ति को प्रायः भूला रहता है जो इस आतंक पर विजयी हो सकती है। वह शक्ति है कर्म की शक्ति, आस्था और विश्वास की शक्ति। प्रस्तुत है इसी भाव भूमि पर आधारित यह प्रेरक लघु कथा—मुक्ति।)—सम्पादक

सुकान्त ने अपने जीवन में एक ही तो सबसे बड़ा संकल्प लिया था—वे कभी कर्म से विश्राम नहीं लेंगे। वे इन पंक्तियों को अक्सर गुनगुनाया करते—

'वह पथ क्या, पथिक कुशलता क्या,
जिस पथ पर बिखरे शूल न हों।
नाविक की धैर्य परीक्षा क्या,
यदि धाराएँ प्रतिकूल न हों॥'

पर इस संकल्प को पहला आघात लगा जब वे रिटायर होने को हुए। रिटायर होने की घड़ी ज्यों-ज्यों निकट आने लगी एक ओर तो वे दफ्तर में अपनी व्यस्तता बढ़ाने लगे कि कोई फाइल अधूरी न रह जाय, वहीं दूसरी ओर उनके साथी मीठी झिड़कियाँ देने लगे—क्या मूर्खता कर रहे हो। चार दिन बाद तो तुम्हें रिटायर होना है। चुपचाप छुट्टी लेकर बैठ रहो। फलतः उन पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव यह पड़ा कि रिटायर होते समय उन्हें अनुभव होने लगा कि सचमुच वे बूढ़े और अशक्त ही चले हैं। भावी जीवन की उनकी अपनी योजना डगमगा उठी।

पर साहस को उन्होंने फिर संजोया और घर गृहस्थी की जिम्मेदारियों को पूरा करने लगे। मगर यहाँ उनके संकल्प को दूसरा आघात देने स्वयं उनके पहले से रिटायर एक मित्र सामने आ गये—देखो अब पहले जैसा शरीर नहीं रहा। घर बाजार के चक्कर में ज्यादा न पड़ो। साथ में एक छड़ी रखो—पता नहीं कहाँ पैर रपट उठे। और सुकांत को लगने लगा कि सचमुच उनकी भुजाएँ अशक्त हो चली हैं, टाँगें जवाब दिया चाहती हैं।

> सुकान्त का हृदय स्वीकृति अस्वीकृति, क्या और क्या नहीं के बीच हाहाकार कर उठा। वे संकल्प के टूट बिखरने और उसे फिर बटोरने संजोने की कोशिशों के बीच छटपटाने लगे। इस छटपटाहट से मुक्ति का कोई रास्ता नहीं नज़र आ रहा था।

सुकांत अब भी न हारे। पर अपनी ही पत्नी, अपने ही बेटे, बेटियाँ और बहुएँ हर घड़ी उनकी निरीहता का अहसास कराने सामने आ गये। जिस अक्ल से उन्होंने अब तक एक अच्छा खासा दफ्तर चलाया था उसे ही घर वाले सठिया गई बताने लगे। कहाँ तक बर्दाश्त करते सुकांत। वे फिर लड़खड़ा गये।

तब क्या इन सारे कष्टों से मुक्ति का मार्ग सचमुच कर्म से सन्यास ले लेना ही होगा? और इसे भी अजमाने सुकांत चले गये गंगातट पर अपने गाँव के पैतृक निवास के एकान्त में। पर "गंगे तव दर्शनात् मुक्ति" भी झूठी पड़ गई। पूजा पाठ और गंगा की लहरें उन्हें तिल भर भी शान्ति न दे सकीं। इस एकान्त का बोझ वे चार दिन भी नहीं संभाल पाये। कभी ख्याल आता बच्चों का कि वे सकुशल शाम को अपने स्कूल, कालेज या दफ्तर से घर पहुँचे या नहीं। ज़माना इतना ख़राब है कि दुर्घटना होते क्या देर लगती है। कभी सोचने लगते कि पत्नी को घबड़ाहट का दौरा तो नहीं पड़ रहा। उसकी दवा कौन लाता होगा।

सुकान्त का हृदय स्वीकृति अस्वीकृति, क्या और क्या नहीं के बीच हाहाकार कर उठा। वे संकल्प के टूट बिखरने और उसे फिर बटोरने संजोने की कोशिशों के बीच छटपटाने लगे। इस छटपटाहट से मुक्ति का कोई रास्ता नज़र नहीं आ रहा था।

उस दिन मौसम अचानक खराब हो उठा। आकाश में बादल गड़गड़ाने लगे। देखते न देखते तूफ़ान आ गया। मूसलाधार वर्षा शुरू हो गई। सुकान्त को चिन्ता हुई— आज चाय नहीं बन पायेगी। भला इस तूफ़ान में ग्वाला दूध क्या ले आयेगा?

तभी दरवाज़े पर आवाज़ हुई। उन्होंने दरवाज़ा खोला तो स्तब्ध रह गये। सामने पानी में लथपथ ग्वाले का अपंग बूढ़ा बाप खड़ा था—बैसाखी के सहारे। एक पतली रस्सी से बँधा दूध का डिब्बा कमर में झूल रहा था।

> सुकान्त के सामने एक प्रकाश खिल उठा—दुखों से मुक्ति जीवन के संघर्षों से पलायन करके नहीं, उसकी समस्याओं का सामना करके ही प्राप्त की जा सकती है।

"अरे बाबा, तुम·····और इस पानी में ?" सुकान्त थोड़ा सहज हुए तो विस्मय से पूछा।

"कल रात लड़का बीमार पड़ गया। फिर दूध तो आप तक लाना ही था।" बूढ़े ने सहज भाव से कहा।

"तुम आये कैसे ? नाले में पानी चढ़ आया होगा ?"

इस बार बूढ़ा थोड़ा मुस्कराया और बोला—"इससे क्या, आना तो था ही इसलिए आया। नाले में कुछ पत्थर भी पड़े हुए हैं। उन्हीं पर होकर पहुँचा हूँ।"

सुकान्त अवाक रह गये। एक पग विहीन वह अस्सी वर्षीय वृद्ध शिलाखंडों पर होकर वहाँ तक पहुँचा था। जिस मृत्यु भय की कल्पना मात्र से प्राणी आतंकित हो उठता है उसका अंश मात्र भी उस वृद्ध के मुख पर न था। उसके भीतर के गहन समुद्र पर जैसे बाहर की इस तूफ़ानी जलवृष्टि का कोई प्रभाव नहीं था।

वृद्ध चला गया। सुकान्त को लगा, उन्होंने वह वस्तु प्राप्त कर ली जिसके लिए उनकी आत्मा भटक रही थी। कौन कहता है सुकान्त कि तुम बूढ़े और अशक्त हो। तुम्हारे हाथ तो इतने समर्थ हैं कि तुम गिरते हुओं को उठा सकते हो। और उनके सामने एक प्रकाश खिल उठा—दुखों से मुक्ति जीवन के संघर्षों से पलायन करके नहीं, उसकी समस्याओं का सामना करके ही प्राप्त की जा सकती है।

और अगले दिन का सूर्य अब एकान्त में नहीं, जन कोलाहल के मध्य देखने के निश्चय से सुकान्त अपना सामान बांधने लगे।

लोग कहते हैं

श्रीमती सरला खन्ना
शोध प्राध्यापक
राज्य शिक्षा संस्थान
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

लोग कहते हैं

राष्ट्रीय शिक्षा नीति से
युग के अनुरूप शिक्षा
सबको सुलभ होगी
सब साक्षर होंगे।

औपचारिक अनौपचारिक
प्रौढ़ शिक्षा साथ ही
जनसंख्या शिक्षा के
चल रहे हैं कार्यक्रम अनेक
इनका परिष्कार कर
विकसित की जाएगी
गुणवत्ता।

शिक्षा द्वारा छात्रों में
चारित्रिक
लोकतांत्रिक
आध्यात्मिक मूल्यों का
विकास किया जाएगा
आधार होगा उनका
वैज्ञानिक दृष्टिकोण
समभुज त्रिकोण

राष्ट्रीय शिक्षा की नई नीति द्वारा
व्यक्ति सब आत्मनिर्भर होंगे।
तकनीकी युग में
रोज़गार के साधन बहुत होंगे।
नवोदय विद्यालय
खुलेंगे जनपदों में
बनेंगे शिक्षालयों के आदर्श
अपार धनराशि खर्च होगी
शिक्षा दीक्षा पर
खुले विश्वविद्यालय, ग्रामीण विश्वविद्यालय
खुलेंगे जल्दी ही
शिक्षा की प्रगति
तेज़ होगी।
शिक्षण प्रशिक्षण पर शोध
किये जायेंगे
ज्ञान विज्ञान का
प्रसार किया जाएगा।
बालक का बौद्धिक, शारीरिक
नैतिक चारित्रिक
विकास किया जाएगा
और सौंदर्यपरक दृष्टि पनपेगी।
भारत की एकता, राष्ट्रीयता
सामाजिक सद्भाव
अन्तर्राष्ट्रीय भाव
जागेगा जन में
आम नीम जामुन के
सीसम सागौन के
वृक्षारोपण होंगे
बच्चों की शाला की बगिया में
रंग रंग के फूल खिले होंगे।
गूंजेंगे नभ में
देशप्रेम के तराने

और बुने जाएँगे
प्रेम के ताने और बाने ।
आशा है शिक्षा
लक्ष्य पा सकेगी ।
और सपना अपना
साकार कर सकेगी ।
जनसंख्या-प्रवाह
आज चरम सीमा पर
कल यह होगा नियन्त्रित व्यवस्थित
रोज़ी, रोटी, भोजन
कपड़ा, मकान
सबको मिलेगा
ऐसी व्यवस्था होगी निश्चय ही ।
तभी तो लोग कहते हैं
छोटा परिवार
सुख का संसार
शिक्षित सन्तान
घर घर की शान ।
निर्धनता शाप का
शमन होगा ।
दमन होगा ।
होड़ और हिंसा का ह्रास होगा
प्रेम व अहिंसा आसपास होगी ।
क्या नहीं कर सकते हम ?
क्या नहीं बन सकते हम ?
दृढ़ संकल्पों से
सन्तुलित विकल्पों से
सांस्कृतिक विरासत
प्रदेशों की भाषा
शिशु सब सीखें
हिलमिल कर रहें ।
कदम से मिला कर कदम, आगे बढ़ते रहें ।

पढ़ना, लिखना कैसे सिखाएँ

[यादवेश सुन्दर द्विवेदी]

भाषा एक अर्जित गुण है। इसे बालक अनुकरण के द्वारा सीखता है। बालक उस घर की परिवार की, पास-पड़ोस की भाषा सीखता है जहाँ वह पैदा होने के बाद रहता है। जिसके सम्पर्क में वह जितना अधिक रहेगा, उतनी ही अधिक भाषा उस व्यक्ति की वह सीखेगा। अपने परिवार में अपनी माँ, पिता, भाई-बहनों के अति निकट होने के कारण बालक सबसे पहले अपने घर में बोली जाने वाली भाषा का ही अनुकरण करता है। धीरे-धीरे जब वह घर से बाहर निकलकर साथियों के साथ खेलना प्रारम्भ करता है तो अपने साथियों अर्थात् पास-पड़ोस की भाषा का भी अनुकरण करना प्रारम्भ कर देता है। इस प्रकार अनुकरण के द्वारा ही उसमें भाषा का विकास होता है।

भाषा का यह विकास एक साथ ही नहीं होता। क्रमिक सोपानों में होता है। पढ़ना तथा लिखना सिखाने से पूर्व भाषा विकास की इन क्रमिक अवस्थाओं को जानना लाभकारी होगा।

भाषायी कौशल के क्रमिक विकास में—सुनना, बोलना, पढ़ना, और लिखना आते हैं। भाषा सीखने के क्रमिक सोपानों के आकार भी यही हैं। भाषा विकास की प्रथम अवस्था में बालक सुनी हुई भाषा के आधार पर कुछ ऐसे शब्द बोलने लगता है जिनका अर्थ वह भले ही समझ रहा हो किन्तु सुनने वाले के लिए उनका कोई अभिधार्थ नहीं होता। जैसें पानी के लिए पा-पा या दूध के लिए मम-मम कहना। उसके ये प्रयत्न ही भाषा विकास सम्बन्धी प्रारम्भिक प्रयत्न होते हैं।

दूसरी अवस्था में बालक बड़ों का अनुकरण करके सार्थक शब्दों का उच्चारण करना प्रारम्भ कर देते हैं। यद्यपि ये शब्द प्रायः एक पद वाले संज्ञावाची अथवा सर्वनाम-वाची ही होते हैं; किन्तु इस प्रकार प्रयुक्त होने वाले एक पद में ही बालक के कथ्य का पूरा अर्थ छिपा होता है, जो पूरे एक वाक्य अथवा वाक्यों का निहितार्थ होता है।

तीसरी अवस्था में बालक संज्ञा तथा क्रियापदों को मिलाकर छोटे-छोटे वाक्यों का उच्चारण करने लग जाता है। इस अवस्था तक आते-आते बालक का प्रत्यय-बोध धीरे-धीरे काफी बढ़ जाता है। स्वर यंत्र भी पुष्ट हो चुकता है।

भाषा विकास की चौथी अवस्था में बालक संज्ञा और क्रियापदों के साथ-साथ विशेषण, क्रिया विशेषण और अपव्ययों आदि का प्रयोग करना सीख लेता है। धीरे-धीरे वह सरल वाक्यों का प्रयोग कर मौखिक अभिव्यक्ति द्वारा अपने भावों विचारों को दूसरों के सामने प्रकट करने लगता है। तीन वर्ष का होते-होते सामान्यतः बालक में भाषा सम्बन्धी इतना विकास हो जाता है—उसका शब्द भण्डार इतना सक्षम हो जाता है कि वह सामान्य से अपनी बात स्पष्टतः अभिव्यक्त करने का प्रयास करने लगता है।

सुनकर समझने फिर बोलने की क्रिया के बाद ही पढ़ने और लिखने की क्रियाएँ आती हैं। 'पढ़ने' का अर्थ स्पष्ट करते हुए श्री ब्रज भूषण शर्मा ने अपनी पुस्तक 'प्रारम्भिक पठन शिक्षण' में लिखा है—पढ़ने का अर्थ मुद्रित अथवा हस्तलिखित लिपि-प्रतीकों को को अर्थ में परिवर्तित कर लेने की क्षमता है। पढ़ना सीखने के लिए लिपि-प्रतीकों को पहचानना आवश्यक होता है। तभी अर्थ समझ में आता है। बोलने की अपेक्षा पढ़ना और पढ़ने की अपेक्षा लिखना क्रमशः अधिक जटिलतर क्रियाएँ हैं। अतः पढ़ना लिखना सिखाने से पूर्व इस बात की जाँच कर लेना अति आवश्यक होगा कि बालक शारीरिक तथा मानसिक रूप से इसके लिए तैयार है अथवा नहीं।

पढ़ना-लिखना सिखाने से पूर्व बालक में निम्नलिखित क्षमताओं का होना आवश्यक है—

1. घर से भिन्न विद्यालय के नये वातावरण के साथ समायोजन।
2. प्रत्यय-बोध की स्पष्टता तथा इसका विस्तार। 'आम' शब्द कहने पर उसके आकार, रंग और स्वाद आदि का एक साथ बोध हो जाना।
3. दृश्य तथा श्रव्य इन्द्रियों का पर्याप्त विकास।
4. उच्चरित अक्षरों की अलग-अलग ध्वनियों में अन्तर समझ पाने की सामर्थ्य।
5. मौखिक तथा लिखित शब्दों के पारस्परिक सम्बन्ध का विकास।
6. शिशु का अपनी माँस-पेशियों पर नियंत्रण।

उपर्युक्त क्षमताओं का विकास हो जाने पर ही बालक को पढ़ना, लिखना सिखाना प्रारम्भ करना चाहिए। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु निम्नांकित कार्यकलापों को कक्षा-शिक्षण के रूप में अपनाया जाना चाहिए।

1. बालक के परिवार, पास-पड़ोस तथा परिचित पशु-पक्षियों आदि के सम्बन्ध में उससे बातचीत करना जिससे बच्चे की झिझक दूर हो सके।

2. चित्रों में प्रदर्शित पात्रों के नाम, काम, रंग और रूप आदि के विषय में इन्हें दिखाते हुए उनसे चर्चा करना, प्रश्न पूछना।

3. चित्रों में दिखाये गये पात्रों के नामों का अभ्यास इस प्रकार कराना कि बालकों को प्रयुक्त वर्ण-ध्वनियों को भली-भाँति सुनने का अभ्यास हो सके। इससे वे ध्वनियों के विभेदीकरण को पहचानने लगेंगे।

4. कुछ शब्द-युग्मों जैसे, अमरूद-अनार, कमल-कलम मछली-मटर आदि के चित्रों के माध्यम से उनके नामों को बार-बार बोलने का अभ्यास कराना। इन चित्रों के साथ सम्बन्धित शब्दों के लिखित रूपों को बार-बार दिखाना और इन शब्दों के प्रथम वर्ण—अ, क, म आदि की ध्वनियों को बार-बार बोलकर उनकी पहचान ठीक प्रकार से कराने का अभ्यास कराना।

5. परिचित वर्ण-ध्वनियों से प्रारम्भ होने वाले शब्दों को प्रत्येक बालक से बुलवाने का खेल कराना; जैसे अध्यापक कहे—मैं 'अ' से प्रारम्भ होने वाला शब्द बोलता हूँ 'अमर' अब तुम बोलो। परिचित शब्दों के अन्तिम वर्ण से प्रारम्भ होने वाले शब्दों की भी पूछा जा सकता है।

6. श्यामपट्ट के बायीं ओर लिखे शब्दों को दायीं ओर लिखे वाक्यों में ढूंढ़कर पहचान करने का अभ्यास करवाना। शब्दों का उच्चारण स्वयं करना साथ ही छात्रों से करवाना।

7. चित्र दिखाकर श्यामपट्ट पर लिखे तत्सम्बन्धी शब्द नाम की पहचान कराना। उदाहरणार्थ अनार का चित्र दिखाकर श्यामपट्ट पर लिखे शब्दों में से 'अनार' शब्द ढूंढ़ने के लिए कहना।

8. प्रसंग के संकेत से शब्दों की पहचान कराना। जैसे—यह पूछना कि—कमला भाई का नाम श्यामपट्ट पर लिखा है। उसे ढूंढ़ो और उसके नीचे लाइन खींचो।

9. ध्वनि और दृष्टिगत विभेदीकरण के अभ्यास के लिए एक सी ध्वनि और एक सी आकृति के वर्णों का शब्द के आदि, मध्य और अन्त में प्रयोग करके छात्रों से बुलवाना तथा श्यामपट्ट पर उन्हें लिखकर दिखाना।

10. बाल पुस्तकालय की व्यवस्था द्वारा भी बच्चों में पढ़ने के प्रति रुचि जाग्रत की जा सकती है। बच्चे स्वयं पुस्तकें निकाल कर उन्हें उलटते-पुलटते, चित्र देखते और उन्हें पढ़ने का प्रयास करते हैं। प्रसिद्ध विद्वान् श्री ई० आर०

बॉइसी ने अपनी पुस्तक 'टुडे एण्ड टुमारो' खण्ड १ में लिखा है—बाल पुस्तकालय (बुक कार्नर) स्थायी रूप से प्रत्येक कक्ष में आकर्षक एवं व्यवस्थित रूप में होना चाहिए · · · जहाँ बच्चे अपनी मनचाही पुस्तक निकाल सकें और अपने मनोविनोद के लिए उन्हें पढ़ सकें। (पृष्ठ 104)

प्रत्यय निर्माण हेतु भी कुछ अभ्यास छात्रों को कराये जाने चाहिए। उदाहरण स्वरूप 'सहायता' शब्द का अर्थ स्पष्ट करने के लिए निम्नलिखित चित्रों की सहायता ली जा सकती है—

1. किसी अन्धे व्यक्ति को सड़क पार कराते हुए एक बालक का चित्र।
2. कीचड़ में फँसी गाड़ी को धक्का देकर पार कराते हुए बालकों का चित्र।
3. लकड़ी के गट्ठर या किसी बोझ को किसी औरत द्वारा उठाने में सहायता करते हुए बालक का चित्र।
4. दौड़ते हुए छोटे बालक के गिर पड़ने पर बड़े बालक द्वारा उसे उठाकर उसकी धूल झाड़ते हुए तथा कपड़े ठीक करते हुए बालक का चित्र।

प्रत्यय निर्माण के लिए इसी प्रकार के अन्य प्रसंगों का प्रयोग किया जा सकता है।

लिखना सिखाने हेतु कुछ प्रारम्भिक अभ्यास यहाँ दिये जा रहे हैं। इनका आवश्यकतानुरूप प्रयोग किया जा सकता है।

1. लेखन-अभ्यास हेतु आड़ी-सीधी रेखाएँ—गोलाकार, अर्द्धगोलाकार तथा विन्दुओं को जोड़ने वाली रेखाएँ खिचवाना।
2. विन्दुओं द्वारा किसी वर्ण की आकृति बनाकर छात्रों द्वारा उस पर पेन्सिल फेरना।
3. बालू या मिट्टी में अँगुली द्वारा वर्ण लेखन का अभ्यास कराना।
4. दफ्ती के कटे हुए वर्णों की सहायता से लिखने का अभ्यास कराना।
5. चित्र दिखाकर वस्तुओं के नाम बताना तथा नामों के शब्दों को श्याम पट्ट पर मोटे-मोटे और साफ अक्षरों में लिखवाना।
6. प्रत्येक वर्ण की आकृति के कई खण्ड होते हैं। इन खण्डों की श्यामपट्ट, तख्ती या कापी पर लिख कर छात्रों द्वारा तदनुरूप आकृतियाँ बनाकर पूरे वर्ण को लिखने का अभ्यास कराना।

लिखने में दृश्य, श्रव्य और क्रिया का सामंजस्य होता है। बालक वर्णों या शब्दों को देखता है, तो उनका चित्र उसके मन में अंकित हो जाता है। जब वह उसी वर्ण या शब्द को लिखने लगता है तो शारीरिक क्रिया के साथ-साथ मानसिक क्रिया भी होती है। वर्ण या शब्द को लिखते समय वह उसका मानसिक उच्चारण भी करता है। अतः लिखना सिखाने की इन शारीरिक एवं मानसिक क्रियाओं का समुचित और निरन्तर अनुवर्तन होते रहना अति आवश्यक है।

राज्य शिक्षा संस्थान, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद के विभिन्न अनुभागों एवं परियोजनाओं की त्रैमासिक आख्याएँ
[जुलाई-सितम्बर 86]

जनसंख्या शिक्षा प्रकोष्ठ

प्रशिक्षण : गोरखपुर जनपद में ब्लाक स्तरीय जनसंख्या शिक्षा प्रशिक्षण के 16 चक्र पूर्ण हुए जिसमें अनुमानतः 800 प्रतिभागी प्रशिक्षित किए गये।
जनपद लखनऊ में ब्लाक स्तरीय प्रशिक्षण का एक चक्र पूर्ण जिससे 40 प्रतिभागी प्रशिक्षित हुये।

नगर क्षेत्र, नरहई, लखनऊ में प्राइमरी स्तरीय जनसंख्या शिक्षा प्रशिक्षण आयोजित हुआ जिसमें कुल 69 व्यक्ति प्रशिक्षित हुए।

मुद्रण कार्य— फ़ोल्डर का वितरण जारी रहा। प्राइमरी स्तरीय तथा मिडिल स्तरीय शिक्षक संदर्शिका का भिन्न जनपदों में वितरण आरम्भ हुआ।

अन्य कार्य— शान्तिकुंज, हरिद्वार में चल रहे नैतिक शिक्षा कार्यक्रम में जनसंख्या शिक्षा के संदर्भ में प्रकोष्ठ के प्रभारी श्री सुशील कुमार सक्सेना द्वारा वार्ता प्रस्तुत की गयी ब्लाक स्तरीय प्रशिक्षण के सम्बन्ध में हुए व्यय का संकलित ब्यौरा प्राप्त करने हेतु प्रकोष्ठ के अधिकारी जनपदों में गये।

जनसंख्या शिक्षा पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता 1986 के पुरस्कार विजेताओं के प्रमाण पत्र सम्बन्धित विद्यालयों को भेजे गये। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली को भेजने हेतु "स्टेटस स्टडी शिड्यूल"(स्थिति-अध्ययन कार्यक्रम) के बनाने की तैयारी की गयी।

यूनेस्को फ़ेलो श्री सै० इब्राहिम अब्दाली, जनरल डायरेक्टर, शिक्षा विभाग, अफ़गानिस्तान शिक्षा संस्थान पधारे। यहाँ उन्होंने जनसंख्या शिक्षा के विभिन्न क्रिया कलापों की जानकारी प्राप्त की।

ग्यारहवीं एवं बारहवीं कक्षाओं के स्तर पर जनसंख्या शिक्षा की स्थिति के सर्वेक्षण हेतु संस्थान में दिनांक 11 से 13 जून 1986 के मध्य एक कार्यशाला का आयोजन हुआ जिसमें 24 प्रतिभागी प्रशिक्षित हुए। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली के विशेषज्ञ डा० जवाहरलाल पाण्डेय कार्यशाला में विशेषज्ञ के रूप में सम्मिलित हुए।

प्राविधिक इकाई

प्रशिक्षण

1. दिनांक 8-4-86 से 10-4-86 तक नई शिक्षा नीति पर होने वाली गोष्ठियों के लिए सन्दर्भ व्यक्ति का प्रशिक्षण प्राप्त किया गया।

2. दिनाँक 11-5-86 से 18-5-86 तक प्राविधिक इकाई के विशेषज्ञों द्वारा हरद्वार में आयोजित अभिनवीकरण गोष्ठी में प्रति उप वि० नि०/उप वि० निरीक्षिकाओं एवं सहायक बालिका वि० नि० को पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण दिया गया।

शोध

3. अनौपचारिक शिक्षा, औपचारिक शिक्षा के लिए कतिपय माड्यूल्स तैयार करने के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली में दिनांक 31-3-86 से 4-4-86 तक राष्ट्रीय स्तर का एक सेमिनार टीचर्स ट्रेनिंग एवं विशेष शिक्षा अनुभाग द्वारा आयोजित किया गया। इसमें अस्पृश्यता एवं जाति भावना जैसे माड्यूल में शिक्षण अधिगम बिन्दुओं का निर्धारण, प्रश्नावली, उत्तर-तालिका, दो कैप्स्यूल तथा पिक्चर बुक तैयार की गयी।

4. दिनाङ्क 21-4-86 को रा० शि० सं० उ० प्र०, इलाहाबाद में आयोजित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान की वार्षिक गोष्ठी में शिक्षा की नवीन संकल्पनाओं, विद्यालय सम्बन्धी समस्याओं पर शोध पत्रक की तैयारी आदि पर विचार-विमर्श कर सम्बन्धित इकाई का कार्य निश्चित किया गया।

अन्य—

5. कक्षा 8 की नैतिक शिक्षा की पाठ्य-पुस्तक के पाठों का वाचन किया गया। समीक्षकों द्वारा, विशेषज्ञों द्वारा प्रदत्त सुझावों के अनुरूप यथावश्यक परिवर्तन किया गया।

6. केप परियोजनान्तर्गत राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद नई दिल्ली से प्राप्त विभिन्न पत्रकों का इकाई के सदस्यों द्वारा अंग्रेजी भाषा से हिन्दी भाषा में अनुवाद करने में सहयोग प्रदान किया गया।

(7) यूनीसेफ़ सहायता प्राप्त पाठ्यक्रम नवीनीकरण परियोजना के अन्तर्गत पूर्व सृजित बालगणित भाग-4, परिवेशीय अध्ययन (विज्ञान) भाग-2 के संशोधन एवं परिमार्जन का कार्य दिनांक 16-6-86 से 21-6-86 तक आयोजित गोष्ठी में सम्पन्न किया गया।

(8) बंगलादेश के शिक्षा निदेशक और उनकी टीम के लिए अंग्रेज़ी भाषा में दस पृष्ठों का एक पत्रक—"Teacher education in U. P." तैयार किया गया।

(9) निरीक्षण अधिकारियों के नैतिक शिक्षा सम्बन्धी प्रशिक्षण पत्रकों की मुद्रण सम्बंधी कार्यवाही की गई।

(10) जनसंख्या शिक्षा प्रकोष्ठ के अन्तर्गत दिनाङ्क 11, 12 एवं 13 जून 1986 को आयोजित कार्यशाला में सामाजिक विषय (भूगोल) के हाई स्कूल स्तरीय पाठ्यक्रम में जनसंख्या-शिक्षा सम्बंधी कतिपय बिन्दुओं का समावेश किया गया।

मासिक विचार गोष्ठी

मासिक विचार गोष्ठी श्रृंखला में प्रतिमास वक्ताओं द्वारा प्रस्तुत पत्रकों का वाचन कार्य, वाचन समिति द्वारा सम्पन्न किया गया। तदुपरान्त उसे राजकीय मुद्रणालय में मुद्रित होने के लिए प्रेषित किया गया।

इस सभा की प्रथम गोष्ठी 26-6-86 को "शिक्षक प्रशिक्षण में जनसंचार-साधनों का उपयोग उपलब्ध सीमित संसाधनों में कैसे कर सकते हैं" विषय पर विशद चर्चा संस्थान के प्रतिभागियों द्वारा हुई। श्री अनन्त राम मिश्र द्वारा लिखित पत्रक उनके सहयोगी श्री मोती लाल पाण्डेय द्वारा प्रस्तुत किया गया।

यूनीसेफ सहायता प्राप्त परियोजनाएं

(क) यूनीसेफ सहायता प्राप्त परियोजना—I ए पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा एवं पर्यावरणीय स्वच्छता

समुदाय सम्पर्क कार्यक्रम को प्रभावपूर्ण बनाने एवं सुचारु रूप से चलाने तथा यूनीसेफ़ से प्राप्त वस संदेशों को समुदाय तक पहुँचाने के लिये 25 विद्यालयों के प्रधाना-

ध्यापक/प्रधानाध्यापिकाओं और अध्यापकगण का अभिनवीकरण कार्यक्रम चार फेरों में आयोजित किया गया। इसमें परिवारों में वितरण हेतु शिक्षकों को शैक्षणिक सामग्री (चार्ट, पोस्टर, फोल्डर आदि) दी गयी। समुदाय सम्पर्क कार्यक्रम के मूल्यांकन हेतु प्रयोग पूर्व तथा प्रयोगान्तर परीक्षण प्रपत्र (प्रश्नावली) पर भी चर्चा की गयी तथा विद्यालयों में आने वाले छात्रों के परिवारों में वितरण एवं परीक्षण हेतु उसे अध्यापकों को दिया गया।

उत्तर प्रदेश के समस्त प्राइमरी विद्यालयों के लिये 30 सप्ताह के एक वृहत् कार्यक्रम की शिक्षक-संदर्शिका विकसित करने हेतु एक चार दिवसीय कार्यशाला का आयोजन दिनांक 30-4-86 से 3-5-86 तक किया गया।

परियोजना सहायक ने पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा एवं पर्यावरणीय स्वच्छता से सम्बन्धित दक्षता आधारित प्रश्नों के विकास हेतु राष्ट्रीय शैक्षिक संस्थान नई-दिल्ली के परिसर में आयोजित कार्यशाला में दिनांक 5 से 9 मई 1986 तक भाग लिया।

समुदाय सम्पर्क कार्यक्रम के अन्तर्गत परियोजना से सम्बन्धित संस्थान की टीम ने कौड़िहार विकास खण्ड के हथिगहा, भगौतीपुर, कौड़िहार, मंसूराबाद तथा चायल विकास खण्ड के मातपुर, मंदर गांवों का वीक्षण किया।

यूनीसेफ सहायता प्राप्त परियोजना संख्या-2

पाठ्यक्रम नवीनीकरण परियोजना संख्या-2 के अन्तर्गत एक 6 दिवसीय मूल्यांकन कार्यशाला दिनांक 9-4-86 से 14-4-86 तक राजकीय दीक्षा विद्यालय मंझनपुर में आयोजित की गयी। प्रथम चक्र की इस कार्यशाला में परियोजनागत छः जनपदों के राजकीय दीक्षा विद्यालयों के शिक्षक/प्रशिक्षक सम्मिलित हुए। कार्यशाला में परियोजनागत प्राथमिक विद्यालयों के कक्षा 4 के शिक्षकों द्वारा उनकी कक्षा की पाठ्यपुस्तकों एवं शिक्षक संदर्शिकाओं के पाठवार तथा समग्र मूल्यांकन की सूचनाओं का संकलन भाषा, गणित, परिवेशीय अध्ययन (सामाजिक विषय, विज्ञान), समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति के विभिन्न समूहों में पूर्ण कराया गया। संस्थान के विशेषज्ञों ने कार्यशाला में सम्मिलित होकर मूल्यांकन कार्य को पूर्ण कराया।

द्वितीय चक्र की कार्यशाला दिनांक 3-5-86 से 8-5-86 तक राजकीय दीक्षा विद्यालय कर्वी में आयोजित की गयी जिसमें अन्य नौ जनपदों के राजकीय दीक्षा विद्यालयों के शिक्षक-प्रशिक्षकों के द्वारा राज्य शिक्षा संस्थान के विशेषज्ञों के सहयोग से मूल्यांकन कार्य पूर्ण कराया गया।

दिनाँक 16-6-86 तक राज्य शिक्षा संस्थान में आयोजित कार्यशाला में 45 विषय

विशेषज्ञ तथा शिक्षक सम्मिलित हुए। कार्यशाला में परियोजना संख्या 2 के अन्तर्गत 150 प्राइमरी विद्यालयों हेतु रचित तथा प्रयोगाधीन कक्षा 4 की भाषा, गणित, परिवेशीय अध्ययन (विज्ञान तथा सामाजिक अध्ययन) और समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति से सम्बन्धित पाठ्य-पुस्तकों एवं शिक्षक संदर्शिकाओं का मूल्यांकन सूचनाओं के आधार पर संशोधन किया गया।

यूनीसेफ सहायता प्राप्त सामुदायिक शिक्षा एवं सहभागिता में विकासात्मक क्रियाकलाप परियोजना संख्या-3

आख्यागत त्रैमास में परियोजना के अन्तर्गत निम्नलिखित कार्य सम्पादित किये गये :—

(क) 15-35 वय वर्ग हेतु शैक्षणिक सामग्री निर्माण कार्यशाला—: 23 सें 28 मई 86 तक 15-35 वय वर्ग हेतु शैक्षणिक सामग्री एवं कार्यकर्त्ताओं हेतु निर्देशनात्मक साहित्य के विकास हेतु एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में कार्यकर्त्ता, शिक्षक, शिक्षक-प्रशिक्षक एवं विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ कुल 35 प्रतिभागी सम्मिलित हुए। कार्यशाला की अवधि में निम्नलिखित सामग्री के प्रथम आलेख तैयार किये गये—

(क) महिलाओं के साथ काम करना

(1) प्रौढ़ प्रवेशिका सन्दर्शिका

(3) प्रौढ़ प्रवेशिका पर आधारित कार्य पुस्तिका

(4) स्वास्थ्य शलाका प्रश्नावली

(5) स्वास्थ्य प्रश्नावली की प्रयोग विधि

(6) प्रचार साहित्य

(ख) महिला कार्यकर्त्रियों का प्रशिक्षण—पाँचों सामुदायिक शिक्षा केन्द्रों की महिला कार्यकर्त्रियों के लिए एक आठ दिवसीय सघन प्रशिक्षण कार्यक्रम 23 से 30 जून 86 तक आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में दो केन्द्रों की कार्यकर्त्रियाँ सम्मिलित न हो सकीं। प्रशिक्षण अवधि में महिलाओं के लिए कार्यक्रमों का आयोजन करने से सम्बन्धित विविध सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक पक्षों पर वार्ताओं, विचार-विमर्श एवं प्रयोगात्मक कार्य का आयोजन किया गया।

यूनीसेफ सहायता प्राप्त पूर्व प्राथमिक शिक्षा परियोजना संख्या-4-बी

पूर्व प्राथमिक शिक्षा परियोजना के सफल कार्यान्वयन हेतु संस्थान की दो सदस्य श्रीमती मालिनी मालवीय तथा श्रीमती नरजिस जैदी ने एक मास का सघन प्रशिक्षण दिनांक 8-4-86 से 7-5-86 तक राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली से प्राप्त किया।

राष्ट्रीय परिषद द्वारा विकसित 'चिल्ड्रेन्स गेम्स' का अनुवाद एवं संवर्द्धन करने के उद्देश्य से संस्थान में एक कार्यगोष्ठी दिनांक 12-5-86 से 15-5-86 तक आयोजित की गयी। इस कार्यगोष्ठी में संस्थान द्वारा विकसित 'शिशु गीत' की धुनें तैयार की गयीं।

चायल विकास क्षेत्र के पूर्व प्राथमिक शिक्षा केन्द्रों में कार्य करने हेतु शिक्षिकाओं के चयन की प्रथम सूची अपर जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी (महिला) के कार्यालय से प्राप्त हुई।

यूनीसेफ सहायता प्राप्त परियोजना संख्या (केप) 5

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (महिला) मोदीनगर, गाजियाबाद में दिनांक 2-4-86 से 7-4-86 तक अधिगम सामग्री प्रक्रमण सम्बन्धी कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें सांस्कृतिक विरासत तथा सामाजिक अध्ययन के क्षेत्र से सम्बन्धित तीन नवीन माड्यूलों का लेखन कार्य किया गया।

केप परियोजना प्राथमिक स्तरीय पाठ्यक्रम विकास सम्बन्धी कार्यशाला 16 से 21 अप्रैल 1986 की तिथियों में, अधिगम केन्द्र सहायकों एवं दीक्षा विद्यालय के केप प्रभारी शिक्षक-प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण सम्बन्धी कार्यशाला का आयोजन 23 अप्रैल से 2 मई 86 की तिथियों में राज्य शिक्षा संस्थान, इलाहाबाद में किया गया। इन कार्यशालाओं का मार्ग निर्देशन प्रो० पी. एन. दबे, अध्यक्ष पूर्व प्राथमिक एवं प्राथमिक शिक्षा संकाय, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद नई दिल्ली, तथा परिषद के अन्य विशेषज्ञों डॉ० एस० डी० रोका डा० (श्रीमती) कमला अरोड़ा, श्रीमती सविता वर्मा तथा डॉ० वी० पी० गुप्ता द्वारा किया गया।

प्राथमिकशिक्षा व्यापक उपागम (केप) परियोजना के अन्तर्गत दिनांक 23-4-86 से 25-4-86 तक अधिगम केन्द्र सहायकों के प्रशिक्षण हेतु दस दिवसीय कार्यशाला का

आयोजन संस्थान द्वारा किया गया इस कार्यशाला में प्रशिक्षार्थियों के मार्गदर्शन हेतु राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली से प्रोफेसर एस० डी० रोका तथा डॉ० वी० पी० गुप्ता सम्मिलित हुए। परियोजनान्तर्गत दिनांक 7 से 9 मई 1986 तक की तिथियों में चित्रकारों की कार्यशाला संस्थान द्वारा आयोजित की गयी। माह मई के अन्तिम सप्ताह में अधिगम केन्द्र सहायकों के प्रशिक्षण हेतु दस दिवसीय कार्यशाला दिनांक 24-5-86 से क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (महिला) लखनऊ में प्रारम्भ हुई जो 2 जून 1986 को समाप्त हुई।

केप परियोजनान्तर्गत संचालित अधिगमकेन्द्रों के सहायकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम की श्रृंखला में दस दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन दिनांक 4-6-86 से 13-6-86 तक इलाहाबाद से किया गया। इनके साथ ही सम्बन्धित दीक्षा विद्यालयों के केप प्रभारियों को भी अन्तिम पाँच दिनों में प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इसी के सातत्य में दिनांक 17-6-86 से 26-6-86 तक दूसरी दस दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन इलाहाबाद में किया गया जिनमें अधिगम केन्द्र सहायकों तथा सम्बन्धित दीक्षा विद्यालयों के केप प्रभारी सम्मिलित हुए।

संस्थान के प्रकाशन

संस्थान विचार :

वर्ष 1986–87 में प्रकाशित होने वाले संस्थान विचार अंक 17 के शीर्षक, विषय एवं उप-शीर्षकों के बारे में समिति द्वारा विचार विमर्श किया गया।

संस्थान समाचार :

संस्थान समाचार संयुक्तांक 79 तथा 80 की पाण्डुलिपि मुद्रण हेतु प्रेस को प्रेषित की गयी।

प्रतिभा की किरण :

'प्रतिभा की किरण' का 1984-85 का संयुक्तांक प्रेस में मुद्रित होने के लिए भेजा गया।

अनौपचारिक शिक्षा प्रकोष्ठ

1. अनौपचारिक शिक्षा से सम्बन्धित प्रश्न-पत्रक का उत्तर टिप्पणी सहित योजना निदेशक, लखनऊ को भेजा गया।
2. अनौपचारिक शिक्षा से सम्बन्धित साहित्य का वितरण तथा साहित्य के मुद्रण के लिए प्रकोष्ठ द्वारा माँग प्रस्तुत की गई।

3. शिक्षक संदर्शिका एवं अनुदेशकों के लिए निर्देशिका का कार्य अनौपचारिक शिक्षा इकाई द्वारा किया गया। इस कार्य को संस्थान में आयोजित होने वाली विचार गोष्ठी कार्यशाला में सम्पादित किया जाना प्रस्तावित है।

4. अनौपचारिक शिक्षा की एक पर्यवेक्षिका के विरूद्ध शिकायतों की जाँच की गई।

5. अनौपचारिक शिक्षा से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन संस्थान की अनौपचारिक शिक्षा इकाई में किया गया।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान

प्रसार कार्य :

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा, गाजियाबाद मुज़फ्फरनगर तथा लखनऊ (महिला) से केप कार्यशालाओं का आयोजन किया गया तथा नये कैप्स्यूल तैयार किये गये। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (महिला) झाँसी की प्रवक्ताओं ने संकुल के विद्यालयों में ह्रास अवरोध सम्बन्धी आंकड़ों का संकलन किया तथा आख्या प्रस्तुत की। संलग्न आदर्श विद्यालय से शिक्षास्तरोन्नयन हेतु संस्थान की प्रवक्ताओं ने वार्षिक परीक्षा की उत्तर पुस्तिकाओं का पुनर्वीक्षण कार्य किया तथा अपने सुझाव प्रस्तुत किये।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मोदीनगर की प्रवक्ताओं ने समीपवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर बालिकाओं तथा महिलाओं को सिलाई व कढ़ाई का कार्य सिखाया।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (महिला) लखनऊ की प्रवक्ताओं ने अंशकालीन कक्षाओं द्वारा बच्चों को हिन्दी तथा गणित की शिक्षा दी। चतुर्थवर्गीय कर्मचारियों और उनके बच्चों को हिन्दी पढ़ना-लिखना सिखाया।

लेखन कार्य :

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (महिला) झाँसी द्वारा जूनियर हाईस्कूल कक्षाओं हेतु अंग्रेजी विषय में प्रश्नों का निर्माण किया जा रहा है।

निम्नलिखित लेख क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मोदीनगर द्वारा लिखे गये।

1. शैक्षिक पिछड़ेपन का निदान तथा उसको दूर करने के उपाय।"
2. मन्दबुद्धि एवं प्रखर बुद्धि बालकों की शिक्षा।

प्रशिक्षण

	गोष्ठी/प्रशिक्षण	संस्था	दिनांक	विवरण
1	केप प्रक्रमण कार्यशाला	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान गाजियाबाद	12-4-86 से 7-4-86 तक	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (महिला) लखनऊ तथा गाजियाबाद की प्रवक्ताओं ने अधिगम सामग्री का प्रक्रमण तथा कैप्स्यूलनिर्माण किया।
2	नई शिक्षा नीति प्रशिक्षण	रीजनल इन्स्टीट्यूट आफ़ एजूकेशन, अजमेर	8-4-86 से 10-4-86 तक	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (महिला) लखनऊ, मुज़फ्फरपुर और गाजियाबाद की प्रवक्ताओं ने प्रशिक्षणप्राप्त किया।
3	पाठ्यक्रम निर्माण गोष्ठी	राज्य शिक्षा संस्थान उ०प्र० इलाहाबाद	16-4-86 से 21-4-86 तक	केप परियोजना के अन्तर्गत क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (महिला) लखनऊ की प्रवक्ताओं ने हिन्दी पाठ्यक्रम का निर्माण किया।
4	नैतिक शिक्षा प्रशिक्षण	नवयुग विद्यालय लखनऊ	24-4-86 से 29-4-86 तक	
5	नई शिक्षा नीति सम्बन्धी प्रशिक्षण	रीजनल इन्स्टीट्यूट आफ एजूकेशन, अजमेर	8-4-86 से 10-4-86 तक	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (महिला) लखनऊ की प्रवक्ता शिविर में सम्मिलित हुई। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद के सहयोग से तथा राज्य शैक्षिक प्रशिक्षण और अनुसन्धान परिषद द्वारा आयोजित इस प्रशिक्षण में क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान झांसी के तीन प्रवक्ताओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।
6	नई शिक्षा नीति सम्बन्धी परिचर्चा	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान झांसी	5-6-86 से 27-6-86 तक	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान झांसी के कई प्रवक्ता इसपरिचर्चा में सम्मिलित हुए।
7	केप प्रभारी का प्रशिक्षण	राज्य शिक्षा संस्थान, उ०प्र०, इलाहाबाद	9-6-86 से 13-6-86 तक	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान मोदीनगर गाजियाबाद की एक प्रवक्ता ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।
8	केप कार्यशाला	,, ,,	28-4-86 से 2-5-86 तक	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (महिला) झांसी की एक प्रवक्ता ने कार्यशाला में प्रशिक्षण प्राप्त किया।
9	,, ,,	,, ,,	22-6-86 से 26-6-86 तक	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान मुज़फ्फर नगर के एक प्रवक्ता कार्यशाला में सम्मिलित हुए।

ह्रास एवं अवरोध निवारण परियोजना–

इस वर्ष में ह्रास एवं अवरोध निवारण परियोजना विकास क्षेत्र सिराथू और कोंडिहार जिला इलाहाबाद का मूल्यांकन किया गया और यह पाया गया कि परियोजनान्तर्गत विद्यालयों में नामांकन संख्या में वृद्धि हुई तथा ह्रास एवं अवरोध में कमी आई। अतः विभाग द्वारा इस परियोजना का विस्तार सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में करने का निर्णय लिया गया।

इस परियोजना को संचालित करने के लिए मार्ग दर्शन हेतु उद्देश्य एवं कार्यप्रणाली के सम्बन्ध में एक पत्रक तथा मासिक प्रस्तावित कार्यक्रम एवं अन्य प्रपत्र तैयार किये गये।

उत्तर प्रदेश के समस्त जिला बेसिक शिक्षा अधिकारियों को आदेश दिया गया कि वे अपने जिले के किसी एक विकास खण्ड में इस परियोजना को सत्र 1986-87 में चलायें। स्थानीय परिस्थितियों, सुविधाओं और आवश्यकताओं के अनुसार वे कार्यक्रमों में संशोधन, परिवर्तन, परिवर्द्धन कर सकते हैं। राजकीय दीक्षा विद्यालय एवं क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के अध्यापक/अध्यापिका विषय विशेषज्ञ के रूप में उनकी सहायता करेंगे। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी प्रति माह परियोजना की प्रगति से राज्य शिक्षा संस्थान, उत्तर प्रदेश को अवगत करायेंगे।

अभिस्वीकृत विद्यालय परियोजना–

इस वर्ष में अभिस्वीकृत विद्यालय परियोजना विकास क्षेत्र मूरतगंज जिला इलाहाबाद में चयनित 10 प्राथमिक विद्यालयों में शैक्षणिक सामग्रियों का वितरण किया गया। साथ ही परियोजना का मूल्यांकन किया गया और यह पाया गया कि विद्यालयों के शैक्षिक स्तर में पर्याप्त सुधार हुआ है। अतः विभाग द्वारा इस परियोजना का विस्तार सम्पूर्ण प्रदेश में करने का निर्णय लिया गया है।

इस परियोजना को संचालित करने के लिये मार्गदर्शन हेतु उदेद्श्य एवं कार्यप्रणाली के सम्बन्ध में एक पत्रक तथा मासिक प्रस्तावित कार्यक्रम एवं अन्य प्रपत्र तैयार किये गये।

उत्तर प्रदेश के समस्त जिला बेसिक शिक्षा अधिकारियों को आदेश दिया गया कि वे अपने जिले के किसी एक विकास खण्ड के पिछड़े 10 प्राथमिक विद्यालयों को चयनित करके इस परियोजना को सत्र 1986-87 में चलायें। स्थानीय परिस्थितियों, सुविधाओं और आवश्यकताओं के अनुसार वे कार्यक्रमों में संशोधन, परिवर्तन तथा परिवर्द्धन कर सकते हैं। राजकीय दीक्षा विद्यालय एवं क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के अध्यापक / अध्यापिका विषय विशेषज्ञ के रूप में उनकी सहायता करेंगे। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी प्रति माह परियोजना की प्रगति से राज्य शिक्षा संस्थान, उत्तर, प्रदेश को अवगत करायेंगे।

सांख्यिकी अनुभाग

सांख्यिकी अधिकारी एवं उनके सहायकों द्वारा निम्नलिखित कार्य किये गये।

उत्तर प्रदेश में शैक्षिक सर्वेक्षण (प्रारम्भिक स्तर) की आख्या, आँकड़ों का संकलन कर तैयार की गयी तथा मुद्रित कराकर वितरित की गयी।

2. प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम नवीनीकरण परियोजनान्तर्गत कक्षा-4 के मूल्यांकन कार्य की उपलब्धियों की सूचनाओं के संकलन में सहयोग दिया।

3. शिक्षा निदेशालय के प्रकाशन 'शिक्षा की प्रगति' में प्रकाशित होने वाले संस्थान के कृत कार्यों की वर्ष 1986-87 की आख्या तैयार कर निदेशक राज्य शैक्षिक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान परिषद् उ० प्र० को प्रेषित की।

4. उत्तर प्रदेश में सभी जनपदों के एक-एक विकास खण्ड में प्रारम्भिक स्तर पर वास्तविक नामांकन तथा विद्यालय छोड़ने वालों की स्थिति ज्ञात करने हेतु निदेशक, राज्य शैक्षिक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान परिषद्, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रेषित प्रोफ़ार्मा में आवश्यक संशोधन कर प्रपत्र सभी जनपदों के जिला बेसिक शिक्षा अधिकारियों को प्रेषित किया तथा सूचनाएँ एकत्रित की जा रही हैं।

5. उत्तर प्रदेश में अनुसूचित जाति (विशेषकर महिला साक्षरता) के नामांकन व ड्राप आउट रेट का अध्ययन करने हेतु उत्तर प्रदेश के मण्डल मुख्यालय के जनपदों का चयन कर प्रोफ़ार्मा तैयार कर प्रेषित किया गया। सम्प्रति आँकड़ों का संकलन किया जा रहा है।

राज्य शिक्षा संस्थान, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद के विभिन्न अनुभागों एवं परियोजनाओं के कृत कार्यों की त्रैमासिक आख्याएँ

[जुलाई 1986 से सितम्बर 1986 तक]

जनसंख्या शिक्षा प्रकोष्ठ

मुद्रण—प्राइमरी स्तरीय शिक्षक संदर्शिका तथा मिडिल स्तरीय शिक्षक संदर्शिका का विभिन्न मण्डलों में वितरण किया गया। जनसंख्या शिक्षा की त्रैमासिक पत्रिका 'चेतना' की सामग्री को अंतिम रूप दिया गया।

अन्य—दिनांक 3 से 7 जुलाई 1986 तक नैनीताल में उच्चतर माध्यमिक (प्लसटू) कक्षाओं के लिए जनसंख्या शिक्षा सम्बन्धी पाठ्यक्रम के निर्धारण हेतु राष्ट्रीय स्तर की कार्यशाला राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली के तत्वावधान में आयोजित की गई। संस्थान के प्राचार्य कार्यशाला के निदेशक थे। प्रोफेसर श्री सुशील कुमार सक्सेना, श्री जगमोहन सिंह तथा श्री विश्वनाथलाल ने उत्तर प्रदेश का प्रतिनिधित्व किया। श्री आत्म प्रकाश, शिक्षा निदेशक, उत्तर प्रदेश समापन समारोह में मुख्य अतिथि थे।

कला एलबम 'इण्डिया—माई चिल्ड्रेन माई फ्यूचर' का वितरण किया जा रहा है।

ग्यारहवीं तथा बारहवीं कक्षा के लिए जनसंख्या शिक्षा सम्बन्धी पाठ्यक्रम का विकास 21-8-86 से 26-8-86 तक संस्थान में आयोजित गोष्ठी में किया गया। इस गोष्ठी में माध्यमिक शिक्षा परिषद् के श्री के० एन० धवन ने विशेषज्ञ के रूप में योगदान प्रदान किया। विभिन्न संस्थाओं के प्रवक्ताओं ने गोष्ठी में सहयोग दिया।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली के निर्देशन में 8-9-86 से 13-9-86 तक शिमला में एक राष्ट्रीय स्तर की कार्यशाला आयोजित हुई जिसमें संस्थान की ओर से श्रीमती हमीदा अज़ीज़ सम्मिलित हुईं। इस कार्यशाला में प्राथमिक स्तरीय शिक्षक-प्रशिक्षण हेतु जनसंख्या शिक्षा सम्बन्धी पाठ्यक्रम का विकास किया गया।

अक्तूबर 1986 में संभावित पी० पी० आर० मीटिंग की तैयारी की गई।

प्राविधिक इकाई

1. यूनीसेफ़ सहायता प्राप्त परियोजना संख्या-3 के अन्तर्गत संशोधित बालगणित भाग–4 की शिक्षक संदर्शिका के संशोधन का कार्य सम्पन्न किया गया।

2. व्यावसायिक शिक्षा अधिनियम का निर्माण कार्य इकाई द्वारा सम्पन्न किया गया।

3. कक्षा 1 से 12 तक व्यावसायिक शिक्षा हेतु समाजोपयोगी उत्पादक कार्य सम्बन्धी पाठ्यक्रम का निर्माण कार्य किया गया।

4. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली द्वारा निर्मित कक्षा 5 से 10 तक के विज्ञान एवं गणित के पाठ्यक्रम की समीक्षा की गई एव उपयुक्त सुझाव दिये गये।

5. एन. सी. ई. आर. टी. नई दिल्ली द्वारा शिमला में आयोजित प्राथमिक स्तरीय पाठ्यक्रम निर्माण सम्बन्धी कार्यशाला में इस इकाई की प्रभारी श्रीमती हमीदा अज़ीज़ सम्मिलित हुईं एवं निम्नलिखित कार्यों में सहायता प्रदान की। शिमला में आयोजित गोष्ठी में प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के शैक्षिक क्षेत्र में जनसंख्या शिक्षा सम्बोध का समावेश किया गया तथा प्राथमिक स्तरीय शिक्षा की पाठ्य सामग्री में जनसंख्या शिक्षा सम्बोध का समावेश किया गया। उपर्युक्त गोष्ठी में प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के अन्तर्गत विषय-वस्तु का विश्लेषण किया गया।

मासिक विचार गोष्ठी

26 जुलाई 86 को "शिक्षा व्यवस्था के पुनर्निर्माण में समुदाय की भूमिका क्यों ? क्या ? कैसे ?" विषय पर परिचर्चा हुई। श्री ओंकार दत्त उपाध्याय ने विषय का प्रवर्तन किया तथा अन्य वक्ता श्री विश्वनाथ लाल, श्री राम मिलन गिरि तथा श्रीमती गीता यादव ने भी पत्रक प्रस्तुत किये।

22 अगस्त 1986 को "शिक्षा की नई राष्ट्रीय नीति" पर संस्थान के उपप्राचार्य डा० राजेन्द्र प्रसाद शर्मा ने विस्तृत रूप से प्रकाश डाला तथा प्रतिभागियों की जिज्ञासा का समाधान भी प्रस्तुत किया।

12 सितम्बर 1986 को "पर्यावरण शिक्षा" पर विशद चर्चा हुई। श्री ओंकार दत्त उपाध्याय ने कक्षा 1 से 8 तक पर्यावरण शिक्षा को पाठ्यक्रम का अंग बनाने के दृष्टिकोण से पत्रक प्रस्तुत किया। श्री विश्वनाथ लाल, कुमारी आभा सिंह तथा श्रीमती रंजना श्रीवास्तव ने भी अपने पत्रक प्रस्तुत किये।

यूनीसेफ सहायता प्राप्त परियोजना–I ए [पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा एवं पर्यावरणीय स्वच्छता]

प्रत्येक माह में नियमित रूप से परियोजनागत विकास खण्डों के प्रति उप-विद्यालय निरीक्षकों की मासिक बैठकें संस्थान में आयोजित हुईं जिनमें सघन कार्यक्रम के अन्तर्गत चुने गये विद्यालयों के अतिरिक्त परियोजनागत शेष 75 विद्यालयों के अध्यापक-गण के अभिनवीकरण की तिथियाँ निर्धारित की गईं तथा समुदाय सम्पर्क कार्यक्रम के सफल कार्यान्वयन के सम्बन्ध में चर्चा की गयी।

कौड़िहार एवं चायल विकास खण्डों के क्रमशः 40 एवं 35 विद्यालयों के प्रधानाध्यापक / प्रधानाध्यापिकाओं और सहायक अध्यापक/अध्यापिकाओं का द्वि-दिवसीय अभिनवीकरण कार्यक्रम 8 फेरों में दिनांक 21 जुलाई 1986 से 7 अगस्त 1986 तक आयोजित किया गया।

इन अभिनवीकरण गोष्ठियों में समुदाय सम्पर्क कार्यक्रम के अन्तर्गत परिवारों में वितरण के लिये तैयार की गई शैक्षणिक सामग्री (चार्ट, पोस्टर, फ़ोल्डर आदि) के सफल प्रयोग एवं प्रदर्शन पर विशेषज्ञों द्वारा चर्चा की गई। साथ ही उनका विस्तृत विवरण तैयार करके परियोजनागत विद्यालयों के शिक्षकों को वितरित किया गया। समुदाय सम्पर्क कार्यक्रम के आकलन हेतु तैयार किये गये प्रयोग पूर्व तथा प्रयोगान्तर-परीक्षण प्रपत्र (प्रश्नावली) पर भी चर्चा की गई। जिस गाँव में विद्यालय स्थित है उस गाँव से आने वाले बच्चों के परिवारों में वितरण एवं परीक्षण हेतु ये प्रश्नावली (मूल्यांकन प्रपत्र) दी गयी।

समुदाय सम्पर्क कार्यक्रम के अन्तर्गत परियोजना से सम्बन्धित संस्थान की टीम ने चायल विकास खण्ड के मनौरी गाँव का वीक्षण किया।

परियोजना सहायक ने पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा एवं पर्यावरणीय स्वच्छता से सम्बन्धित दक्षता आधारित प्रश्नों को अन्तिम रूप देने हेतु राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली के परिसर में आयोजित-कार्यशाला में दिनांक 25 से 29 अगस्त 1986 तक सहभागिता की।

उत्तर प्रदेश के समस्त प्राइमरी विद्यालयों के लिये 30-सप्ताह के एक बृहत् कार्यक्रम की शिक्षक-संदर्शिका को अंतिम रूप दिया गया।

विगत वर्ष लागू की गयी 40 सप्ताह के कार्यक्रम की सफलता ज्ञात करने के लिये मूल्यांकन प्रपत्र को विकसित किया गया।

समुदाय सम्पर्क कार्यक्रम के अन्तर्गत तैयार किये गये प्रयोगपूर्व एवं प्रयोगान्तर परीक्षण प्रपत्र (प्रश्नावली) के विश्लेषण हेतु संकलन प्रपत्र तैयार किया गया।

यूनीसेफ सहायता प्राप्त पाठ्यक्रम नवीनीकरण परियोजना सं० 2

यूनीसेफ़ सहायता प्राप्त पाठ्यक्रम नवीनीकरण परियोजना के अन्तर्गत निर्मित तथा वर्ष 1984-85 में प्रयुक्त कक्षा 4 की शिक्षण सामग्रियों का संशोधन करके उन्हें पुनर्मुद्रण हेतु अंतिम रूप प्रदान किया गया। इनमें कक्षा 4 की भाषा, गणित, परिवेशीय अध्ययन (सामाजिक अध्ययन तथा विज्ञान) की पाठ्य पुस्तकें तथा शिक्षक संदर्शिकाओं को मुद्रण हेतु भेजा गया। मुद्रण कार्य लगभग पूरा होने वाला है।

वर्ष 1985-86 में परियोजनागत 150 प्राइमरी विद्यालयों में प्रयुक्त कक्षा 5 की शिक्षण सामग्रियों का पाठवार तथा समग्र मूल्यांकन किया गया। मूल्यांकन सूचनाओं के संकलन हेतु दो कार्यशालाएँ (दिनांक 17-9-86 से 22-9-86 तक तथा 24-9-86 से 29-9-86 तक) आयोजित की गयीं। इन कार्यशालाओं में 15 राजकीय दीक्षा विद्यालय से संलग्न प्राइमरी विद्यालयों द्वारा भरे गये मूल्यांकन प्रपत्रों के आधार पर सूचनाओं का संकलन किया गया।

यूनीसेफ सहायता प्राप्त सामुदायिक शिक्षा एवं सहभागिता में विकासात्मक क्रियाकलाप परियोजना सं०-3

1. सामुदायिक शिक्षा केन्द्रों के शिक्षकों, कार्यकर्ताओं आदि का अभिनवीकरण— परियोजना के सुचारु क्रियान्वयन, गत उपलब्धियों पर विचार एवं भावी कार्यक्रमों के निर्धारण हेतु एक अभिनवीकरण कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 21 से 26 अगस्त 86 तक किया गया। कार्यक्रम में पाँचों केन्द्रों के सभी कार्यकर्ता, सम्बन्धित दीक्षा विद्यालय के प्रभारी शिक्षक-प्रशिक्षक, क्षेत्रीय प्रति उप विद्यालय निरीक्षक एवं ग्राम प्रधान कुल 45 प्रतिभागी सम्मिलित हुए। परियोजना के विविध पक्षों पर उपयोगी विचार-विमर्श के अतिरिक्त परियोजना के भविष्य पर विचार किया गया। इस परियोजना को यूनीसेफ़ की वित्तीय सहायता दिसम्बर 86 तक ही प्राप्त होगी। ग्राम प्रधानों एवं केन्द्र के कार्यकर्ताओं तथा प्राथमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों ने आश्वासन दिया है कि वाह्य सहायता न मिलने पर भी वे परियोजना के कार्यक्रमों को संचालित करते रहेंगे।
2. प्रकाशन : परियोजना के अन्तर्गत सामान्य जीवनोपयोगी प्रकरणों पर विकसित पाँच पैम्फ़लेट मुद्रणार्थ दिये गये।
3. विविध : (क) सामुदायिक शिक्षा केन्द्रों को की जाने वाली आपूर्ति के सम्बन्ध में कार्यवाही प्रारम्भ की गयी।

(ख) परियोजना समन्वयक श्री ओंकारदत्त उपाध्याय द्वारा पर्यावरणशिक्षा (जनपद विशिष्टताधारित) कार्यशाला हेतु पृष्ठभूमि पत्रक एवं कार्य-पत्रक विकसित किया गया और इस पर मिरतोला आश्रम के श्री श्री माधव आशीष स्वामी एवं माननीय श्री बी० डी० पाण्डे (भूतपूर्व राज्यपाल पंजाब) से विचार-विमर्श कर अन्तिम रूप दिया गया।

यूनीसेफ सहायता प्राप्त पूर्व प्राथमिक शिक्षा परियोजना सं०-4बी

परियोजना के अन्तर्गत चयनित विकास क्षेत्र चायल के चुने हुए प्राइमरी विद्यालयों में पूर्व प्राथमिक केन्द्र संचालित करने के उद्देश्य से नवनियुक्त शिक्षिकाओं को प्रशिक्षित करने का कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया। दिनांक 24-7-86 से 23-9-86 तक त्रिमासीय सघन प्रशिक्षण का प्रथम चक्र सम्पन्न हुआ। इस प्रशिक्षण में क्षेत्र की 31 शिक्षिकाओं तथा राजकीय मोडल आदर्श विद्यालय संलग्न रा० शि० सं० के एक शिक्षक ने भाग लिया। कार्यक्रम को प्रभावी बनाने के उद्देश्य से इस क्षेत्रमें दीर्घकालीन अनुभव रखने वाले विशेषज्ञों जैसे श्रीमती एस० पी० सहगल अवकाश प्राप्त संयुक्त शिक्षा निदेशक (महिला) तथा श्रीमती रोशिला कर अवकाश प्राप्त उपप्रधानाचार्या—रा० शिशु प्रशिक्षण महाविद्यालय, इलाहाबाद ने उपयोगी तथा ज्ञानवर्द्धक वार्ताओं से प्रशिक्षार्थियों को लाभान्वित किया।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के मुख्य बिन्दु निम्नवत हैं :—

1—शिशु का विकास, उसकी देखभाल तथा शिशु शिक्षा से संबंधित विषय विशेषज्ञों की विशेष वार्ताएँ।

2—प्रशिक्षार्थियों द्वारा कम मूल्य तथा निर्मूल्य वस्तुओं से शिक्षोपकरणों का निर्माण।

3—अपवंचित ग्रामीण शिशुओं की शिक्षा हेतु कठपुतली, गीतों, खेलों आदि विकासात्मक क्रियाकलापों के प्रयोग की क्षमता विकसित करना।

राज्य शिक्षा संस्थान द्वारा विकसित 'शिशु गीत' पुस्तक के गीतों की अधिकांश धुनें श्रीमती सरला खन्ना तथा श्रीमती प्रेमा राय द्वारा तैयार की गयीं तथा प्रशिक्षार्थियों को सिखायी गयीं।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का वीक्षण करने मारीशस का एक शैक्षिक दल दिनांक 20-8-86 को संस्थान में आया। दल के सदस्यों ने प्रशिक्षार्थियों द्वारा निर्मित शैक्षिक उपकरणों का निरीक्षण किया एवं प्रशिक्षार्थियों से उन उपकरणों के प्रयोग के संबंध में जानकारी प्राप्त की। संस्थान द्वारा विकसित 'शिशु गीत' के कुछ गीतों को प्रशिक्षार्थियों ने उनके समक्ष प्रस्तुत किया। सरल, सुबोध एवं शिक्षाप्रद शिशु गीतों से वे बहुत प्रभावित हुए। संस्थान द्वारा विकसित शिशु साहित्य की उन्होंने सराहना की।

दिनांक 28-8-86 को प्रदेश के संयुक्त शिक्षा सचिव ने दिनांक 10-9-86 को राज्य शैक्षिक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान परिषद उ०प्र० के निदेशक श्री गोविन्द नारायण मिश्र ने, तथा समापन समारोह में दिनांक 21-9-86 को मुख्य अतिथि संयुक्त शिक्षा निदेशक

...... Institute of Educational
Planning and Aministration
.... do Marg, New Delhi-110016
DOC. No........................
Date..............................

(महिला) श्रीमती उर्मिला किशोर ने प्रशिक्षार्थियों द्वारा निर्मित शिक्षोपकरणों की प्रदर्शिनी एवं उनके द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम को देखकर प्रसन्नता व्यक्त की।

पूर्व प्राथमिक शिक्षिकाओं के प्रशिक्षण का द्वितीय चक्र दिनांक 26-9-86 से प्रारम्भ हुआ। इस चक्र में श्रीमती सरला खन्ना ने 'शिशु गीत' पुस्तक के कई गीतों की धुनें तैयार कीं तथा प्रशिक्षार्थियों को गीत सिखाये।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा पर आधारित 1987 के कैलेण्डर तथा चार्ट्स की डिजाइन भी तैयार की गयी।

परियोजना की समन्वयक श्रीमती सुषमा सिंह ने राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, राजस्थान, उदयपुर में आयोजित कार्यशाला में भाग लिया एवं तीन प्रकरणों पर बाल-पुस्तकों का विकास किया—1—जाड़े का चक्कर (हास्य) 2—संदीप कैसे बदला (विकलांग बालक) तथा 3—हरा भरा जंगल (वन संरक्षण)।

यूनीसेफ सहायता प्राप्त परियोजना सं०–5 (केप)

प्राथमिक शिक्षा व्यापक उपागम (केप) परियोजनान्तर्गत अधिगम केन्द्र सहायकों की प्रशिक्षण कार्यशाला की श्रृंखला के अन्तर्गत इस माह में दो कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। संदर्भित कार्यशालाएँ दि० 30-6-86 से 9-7-86 तक तथा 21-7-86 से 30-7-86 तक आंग्ल भाषा शिक्षण संस्थान, इलाहाबाद में आयोजित की गयीं। इन कार्यशालाओं में दीक्षा विद्यालयों से संलग्न प्राइमरी स्तरीय अधिगम केन्द्र पर कार्यरत अनुदेशकों (केन्द्र सहायकों) तथा दीक्षा विद्यालयों के 'केप' प्रभारियों ने केन्द्र संचालन की प्रक्रिया में प्रशिक्षण प्राप्त किया।

केप परियोजनान्तर्गत विकसित प्राइमरी स्तरीय अधिगम सामग्री के प्रक्रमण हेतु दो कार्यशालाओं का आयोजन क्रमशः 4 से 9 अगस्त 1986 तथा 18 से 23 अगस्त 1986 की तिथियों में किया गया। इसी माह में चित्रांकन सम्बन्धी दो कार्यशालाओं का आयोजन भी क्रमशः 11 से 13 अगस्त तथा 14 से 16 अगस्त 1986 की तिथियों में किया गया। अधिगम केन्द्र सहायकों के प्रशिक्षण हेतु भी एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जो 26 अगस्त से प्रारम्भ होकर 4 सितम्बर 1986 तक चली।

केप परियोजनान्तर्गत अधिगम केन्द्र के अनुदेशकों [अधिगम केन्द्र सहायकों] के लिए दो कार्यशालाओं का आयोजन क्रमशः 26-8-86 से 4-9-86 तक आंग्ल भाषा शिक्षण संस्थान, इलाहाबाद में तथा 5 से 14 सितम्बर 1986 तक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (महिला) लखनऊ में किया गया। इन कार्यशालाओं में दीक्षा विद्यालयों से संलग्न प्राइमरी स्तरीय अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के अनुदेशकों [अधिगम केन्द्र सहायकों] तथा सम्बन्धित दीक्षा विद्यालयों के केप प्रभारियों को परियोजना की संकल्पना, अधिगम सामग्री तथा केन्द्र संचालन की प्रक्रिया से परिचित कराया गया।

आख्यागत माह में 10-9-1986 को परियोजनान्तर्गत विकसित इकाइयों

सामग्री के अनुमोदनार्थ राज्य स्तरीय परामर्शदात्री समिति की महत्वपूर्ण बैठक राज्य शिक्षा संस्थान, उ0 प्र0, इलाहाबाद में हुई। इस बैठक की अध्यक्षता श्री गोविन्द नारायण मिश्र, निदेशक, राज्य शैक्षिक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान परिषद्, उ0 प्र0, लखनऊ ने की। संदर्भित परामर्शदात्री समिति के बारह सदस्यों में से अधिकांश सदस्य बैठकमेंसम्मिलितहुए।

परामर्शदात्री समिति के सचिव डॉ० राधा मोहन मिश्र, प्राचार्य, राज्य शिक्षा संस्थान, उ० प्र०, इलाहाबाद द्वारा समिति के सम्मुख 12 माड्यूल (78 कैप्स्यूल) अनुमोदन हेतु प्रस्तुत किये गये। अधिगम सामग्री की गुणवत्ता को बढ़ाने के दृष्टिकोण से डॉ० कृष्ण अवतार पाण्डेय, संयुक्त शिक्षा निदेशक (बेसिक) उ० प्र०, इलाहाबाद, कुमारी चंचल मेहरा, फील्ड एडवाइजर, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, मंमफोर्ड गंज, इलाहाबाद, डा० एम० एन० शुक्ल, निदेशक, राज्य हिन्दी संस्थान, वाराणसी, श्री विश्वनाथ तिवारी, सहयुक्त निदेशक, राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान, उ० प्र०, इलाहाबाद तथा श्री एस० पी० पाण्डेय, उप पाठ्यपुस्तक अधिकारी, उ० प्र०, लखनऊ ने बहुमूल्य सुझाव दिये। परियोजना प्रभारी श्री राममिलन गिरि ने समिति द्वारा पूर्व में अनुमोदित सामग्री की मुद्रित प्रतियाँ सदस्यों के अवलोकनार्थ प्रस्तुत कीं। संदर्भ में संशोधन करने का आश्वासन दिया। संदर्भित कार्यशाला में संस्थान के 'केप'—टीम के सदस्य डा० राजेन्द्र प्रसाद शर्मा, उपप्राचार्य, राज्य शिक्षा संस्थान, उ० प्र०, इलाहाबाद, श्री जनमोहन सिंह तथा श्री ओंकार दत्त उपाध्याय सम्मिलित हुए प्रसंगाधीन कार्यगोष्ठी में वांछित संशोधनोपरान्त 12 माड्यूल मुद्रण हेतु अनुमोदित किये गये।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान

प्रसार कार्य

दिनांक 10 जुलाई से 12 जुलाई 86 तक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अल्मोड़ा द्वारा कुमायूँ मण्डल के दीक्षा विद्यालयों के प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों का नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत त्रिदिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इसमें मण्डल के तीन महिला व तीन पुरुष दीक्षा विद्यालय सम्मिलित हुए। संस्थान के तीन शिक्षकों ने भी संदर्भ व्यक्ति के रूप में प्रशिक्षण प्राप्त किया। कुल 45 संदर्भ व्यक्तियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

दिनांक 14 जुलाई से 16 जुलाई 86 तक गढ़वाल मण्डल के दीक्षा विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाध्यापक एवं प्रशिक्षकों का संदर्भ व्यक्ति के रुप में प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इसमें तीन पुरुष तथा दो महिला विद्यालय सम्मिलित हुए। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा के एक शिक्षक को भी संदर्भ व्यक्ति के रुप में प्रशिक्षण प्रदान किया गया। कुल 40 संदर्भ व्यक्तियों को प्रशिक्षित किया गया।

अन्य कार्य

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (महिला) झाँसी की प्रवक्ताओं ने माह जुलाई से अगस्त तक होने वाली नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति से सम्बन्धित प्रशिक्षणों का चार्ट तैयार किया।

प्रशिक्षण

	कार्यक्रम	तिथि	कार्यस्थल	आयोजित विभाग	सहयोगी अभिकरण	विवरण
1.	नई शिक्षा नीति के संदर्भ में संदर्भ—व्यक्तियों का अनुबोधात्मक प्रशिक्षण	10-7-86 से 12-7-86तक तथा 14-7-86 से 16-7-86तक	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, झांसी	राज्य शैक्षिक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान, परिषद उत्तर प्रदेश	राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद नई दिल्ली	40 प्रधानाध्यापक तथा 6 दीक्षा विद्यालयों के अध्यापक प्रशिक्षित किये गये।
2.	सतत् शिक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम	12-7-86 से 21-7-86तक	,, ,,	,, ,,	,, ,,	हाई स्कूल एवं इण्टरमीडियेट विद्यालयों में हाईस्कूल स्तर पर अंग्रेजी व सामान्य विज्ञान पढ़ाने वाले शिक्षकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।
3.	सतत् शिक्षा प्रशिक्षण	22-7-86 से 31-7-86तक	,, ,,	,, ,,	,, ,,	हाईस्कूल एवं इन्टरमीडिएट विद्यालयों में जूनियर हाई स्कूल स्तर पर हिन्दी, संस्कृत एवं सामान्य विज्ञान पढ़ाने वाले 47 शिक्षकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।
4.	नई शिक्षा नीति संबंधी पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण	4-8-86 से 13-8-86तक	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मुज़फ़्फ़रनगर तथा झांसी (महिला)	——	——	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान मुज़फ़्फ़रनगर तथा झांसी (महिला) के प्राइमरी पाठशालाओं के क्रमशः 49 तथा 58 शिक्षकों का प्रशिक्षण सम्पन्न हुआ।
5.	,, ,,	16-8-86 से 25-8-86तक	,, ,,	——	——	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान मुज़फ़्फ़रनगर तथा झांसी (महिला) के प्राइमरी पाठशालाओं के क्रमशः 46 तथा 39 शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया।

	कार्यक्रम	तिथि	कार्यस्थल	आयोजित विभाग	सहयोगी अभिकरण	विवरण
6	नई शिक्षा नीति संबंधी पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण	29-8-86 से 7-9-86तक	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मुज़फ़्फ़र-नगर तथा झांसी (महिला)	— —	——	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मुज़फ़्फ़रनगर तथा झांसी (महिला) के प्राइमरी पाठशालाओं के क्रमशः 55 तथा 30 अध्यापकों को प्रशिक्षित किया गया।
7	,, ,,	4-8-86 से 13-8-86तक	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा	——	——	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अल्मोड़ा द्वारा प्राइमरी पाठशालाओं के 49 प्रधानाध्यापक/प्रधानाध्यापिकाओं को प्रशिक्षित किया गया।
8	,, ,,	16-8-86 से 25-8-86तक	,, ,,	— —	——	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अल्मोड़ा द्वारा प्राइमरी पाठशालाओं के 48 प्रधानाध्यापक/प्रधानाध्यापिकाओं को प्रशिक्षित किया गया।
9	,, ,,	29-8-86 से 7-9-86तक	,, ,,	——	——	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अल्मोड़ा द्वारा प्राइमरी पाठशालाओं के 50 प्रधानाध्यापक/प्रधानाध्यापिकाओं को प्रशिक्षित किया गया।

पत्राचार अनुभाग

बेसिक शिक्षा परिषदीय विद्यालयों में कार्यरत उर्दू अध्यापकों एवं सेवाकाल में मृत अध्यापकों के आश्रितों जो अप्रशिक्षित अध्यापकों के रूप में कार्यरत हैं, को पत्राचार विधि से प्रशिक्षण प्रदान करने के सम्बन्ध में प्रस्ताव निदेशक, राज्य शैक्षिक प्रशिक्षण एवं अनुसन्धान परिषद, लखनऊ को प्रेषित किया गया।

राज्य शिक्षा संस्थान के प्रकाशन

संस्थान समाचार

संस्थान समाचार अंक 79-80 [अप्रैल-जून 86, जुलाई-सितम्बर 86] की प्रूफ़ रीडिंग की गयी। कुछ ही दिनों में उपर्युक्त संयुक्तांक की 600 प्रतियाँ मुद्रित होकर संस्थान में आ जाएँगी।

संस्थान विचार

वर्ष 1986-87 में संस्थान विचार के 17 वें अंक में पर्यावरण से सम्बन्धित लेखों का संकलन किया जायेगा।

प्रतिभा की किरण

वर्ष 1984 एवं 1985 की प्रतिभा की किरण का मुद्रण हो रहा है। पत्रिका के अक्टूबर, 1986 में प्रेस से छप कर आ जाने की पूरी आशा है।

सांख्यिकी अनुभाग

1. उत्तर प्रदेश की शिक्षा सांख्यिकी (तुलनात्मक एवं प्रगतिदर्शक) वर्ष 1987 में प्रकाशित होने वाले आँकड़ों के सारणीयन का कार्य किया जा रहा है।

2. प्रदेश में तीस सप्ताह के परिवेशाधारित पाठ्यक्रम के मूल्यांकन हेतु प्रपत्र निर्मित किये गये।

3. परियोजना संख्या 2 के अन्तर्गत कक्षा–5 में प्रचलित पाठ्य-पुस्तकों की मूल्यांकन उपलब्धियों के संकलन में सहयोग प्रदान किया गया।

4. शान्ति कुन्ज, हरिद्वार में नैतिक शिक्षा के प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत वार्ता प्रस्तुत की गयी।

5. शिशु शिक्षा परियोजनान्तर्गत प्रयुक्त होने वाले प्रपत्रों से प्रशिक्षणार्थियों को अवगत कराया गया तथा विभिन्न सांख्यिकीय एवं सामान्य गणितीय तथ्यों से अवगत कराने हेतु वार्ताएँ प्रस्तुत की गयीं।

Sub. National Systems Unit,
National Institute of Educational
Planning and Administration
17-B,SriAurbindo Marg,NewDelhi-110016
DOC. No.....
Date.....